Issue-12; Vol.01, Sept. 2021 Impact Factor: 6.003 (I2OR)
ISSN–2231-1130
VEETHIKA

भारत के निर्माण में नेहरू की भूमिका

डॉ0 सतीश कुमार सिंह
एसोसिएट प्रोफेसर एवं विभागाध्यक्ष, इतिहास,
डी0एस0एन0 पी0जी0 कालेज,उन्नाव

शोध–सार

नेहरू पश्चिमी सभ्यता के आदर्शों से प्रेरित एक बुद्धिवादी एवं यथार्थवादी चिंतक थे। स्वतंत्रता के पश्चात् नेहरू की सबसे बड़ी चिंता भारत को विश्व के उन्नतिशील राष्ट्रों के समकक्ष बनाने की थी। अपने राजनैतिक दर्शन में वह गांधी जी के काफी निकट रहते हुए अहिंसा की विचारधारा के पोषक थे। 1947 में जब ब्रिटिश सरकार ने भारत को स्वतंत्र घोषित किया तब नेहरू भारत के पहले प्रधानमंत्री बने। जिस स्थिति में ब्रिटिश सरकार ने जवाहर लाल नेहरू को सत्ता सौंपी वह बेहद संवेदनशील परिस्थितियाँ थी। नेहरू को जो भारत मिला था वह लाखों लोगों के रक्त से लिपटा हुआ था जहाँ एक ओर भारत विभाजन का दर्द था वहीं दूसरी ओर साम्प्रदायिकता का जहर वातावरण में घुला था। विभाजन के परिणामस्वरूप लाखों लोग घरों से बेघर हुए और उनके जान माल की सुरक्षा करना नेहरू के लिए किसी बड़ी चुनौती से कम नहीं था। आधुनिक भारत के निर्माण के लिए योजनाबद्ध विकास की आवश्यकता थी जिसके लिए उन्होंने योजना आयोग का गठन किया। उनका विचार था कि विज्ञान और प्रौद्योगिकी के विकास पर ही भारत का भविष्य निर्भर है। गुट निरपेक्ष देशों का संगठन बनाने में नेहरू की प्रमुख भूमिका रही। अहिंसा के रास्ते पर चलते हुए नेहरू ने चीन से दोस्ती का हाथ बढ़ाया और पंचशील समझौता किया। नेहरू सही मायने में आधुनिक भारत के प्रथम निर्माता थे।

मुख्य बिन्दुः– *भारत विभाजन का दर्द, यथार्थवादी चिंतन, लोकतांत्रिक सिद्धान्त एवं योजनाबद्ध विकास।*

प्रस्तावना

जवाहर लाल नेहरू का जन्म 14 नवम्बर, 1889 को इलाहाबाद के एक अमीर घर में हुआ था पिता पेशे से वकील थे और वे भारत के स्वतंत्रता आन्दोलन से जुड़े थे। एक अमीर वकील होने के कारण उन्हें विद्या ग्रहण करने के लिए इंग्लैण्ड भेज दिया गया। उनकी स्कूली शिक्षा हैरो से और कालेज की शिक्षा ट्रिनिटी कॉलेज, लंदन से पूरी हुई। इसके पश्चात् उन्होंने अपनी लॉ की डिग्री कैम्ब्रिज विश्वविद्यालय से पूर्ण की थी। इंग्लैण्ड में उन्होंने 7 साल व्यतीत किये जहां उन्होंने वहां के कैबियन समाजवाद और आयरिश राष्ट्रवाद को भली–भांति समझा। 1912 में बैरिस्टर के रूप में उनकी भारत वापसी हुई। 1921 में सविनय अवज्ञा आन्दोलन में वह महात्मा गांधी के सम्पर्क में आये। नेहरू महात्मा गांधी के सक्रिय और शांतिपूर्ण सविनय अवज्ञा आन्दोलन के प्रति आकर्षित हुए। जवाहर लाल नेहरू ने गांधी से प्रभावित होकर पश्चिमी वस्त्रों को त्यागकर खादी के कुर्ते और टोपी को अपनाया। नेहरू 1920–1922 में असहयोग आन्दोलन में सक्रिय रूप से भाग लेते हैं और इस दौरान पहली बार उन्हें ब्रिटिश सरकार ने गिरफ्तार कर जेल भेज दिया। 1924 में नेहरू इलाहाबाद नगर निगम के अध्यक्ष चुने गये। 1923 में नेहरू कांग्रेस के महासचिव चुने गये और कई वर्षों तक उन्होंने कांग्रेस के अध्यक्ष के रूप में कार्य किया। 1946 में नेहरू अन्तरिम सरकार में प्रधानमंत्री और स्वतंत्र भारत के प्रधानमंत्री बने जिस पद पर वह मृत्युपर्यन्त बने रहे।

नेहरू पश्चिमी सभ्यता के आदर्शों से प्रेरित एक बुद्धिवादी एवं यथार्थवादी चिंतक थे। स्वतंत्रता के पश्चात् नेहरू की सबसे बड़ी चिन्ता भारत को विश्व के उन्नतिशील राष्ट्रों के समकक्ष बनाने की थी। अपने राजनैतिक दर्शन में वह गांधी जी के काफी निकट रहते हुए अहिंसा की

विचार धारा के पोषक थे। गांधी जी को नेहरू के ऊपर पूर्ण विश्वास था और वह इस तथ्य को प्रकट कर चुके थे कि नेहरू ही उनके राजनैतिक उत्तराधिकारी है। नेहरू गांधी जी की आध्यात्मिक अवधारणाओं के असहमत होते हुए भी नैतिकता के प्रबल पक्षधर थे। वे राजनैतिक सिद्धान्तों में पूर्णतः दक्ष थे किन्तु अन्याय और शोषण की प्रवृत्तियों से समझौता नहीं कर सकते थे। वे गांधी की ईश्वर सम्बन्धी धारणाओं से सहमत न होते हुए भी एक परमसत्ता को नकार न सके। अपनी पुस्तक में जवाहर लाल नेहरू लिखते हैं, ''जब भी मैं इस विश्व की ओर देखता हूँ मुझे अज्ञात गहराईयों और रहस्यों का आभास होता है यह चीज वास्तव में क्या है, मैं नहीं जानता। मैं उसे ईश्वर नहीं कहता क्योंकि ईश्वर का बहुत कुछ अर्थ ऐसा है, जिसमें मेरा विश्वास नहीं है। मैं किसी देवता या किसी अज्ञात सर्वोच्च सत्ता जिसका स्वरूप मानव जैसा हो की कल्पना की क्षमता अपने में नहीं पाता.'' उन्होंने बौद्धिक दृष्टि से कुछ सीमा तक दबी जुबान में अद्वैतवादी होने का संकेत दिया।

नेहरू राजनीति में सत्य के प्रयोग का समावेश करना चाहते थे। वे मानते थे कि भारत की गरीबी, अंग्रेजों का शोषण, भारतीय समाज में व्याप्त असमानता और हमारे जीवन में व्याप्त विकृतियां सत्य हैं और इस सत्य को स्वीकारने के बाद ही हमारी उन्नति का मार्ग प्रशस्त होगा। वे गांधी के सत्याग्रह से तो सहमत थे परन्तु गांधी के हृदय परिवर्तन की अवधारणा से सहमत नहीं थे। वे समाज में सुधार के पक्षधर थे और उनका लक्ष्य मानवतावाद की स्थापना था। उनका मानना मानव की प्रगतिशीलता ही सत्य का सच्चा अनुसरण है।

नेहरू की विचारधारा का एक महत्वपूर्ण पक्ष उनका इतिहास बोध था। अपनी पुस्तक 'डिस्कवरी ऑफ इंडिया'', 'ग्लिप्सेज ऑफ वर्ल्ड हिस्ट्री', एवं 'मेरी आत्मकथा' में नेहरू ने इतिहास सम्बन्धी विचारों की विशद् व्याख्या प्रस्तुत की। उन्होंने भारत की समस्याओं के मूल में विकृतिपूर्ण अर्थव्यवस्था को दोषी पाया। महान् सांस्कृतिक विरासत होते हुए भी भारत उन्नति के मार्ग पर इस कारण नहीं चल पाया क्योंकि धर्मान्धता व दकियानूसी की वजह से कई सामाजिक कुरीतियों ने जन्म लिया। इसके समूल नाश के लिए नेहरू ने वैज्ञानिक दृष्टिकोण की स्थापना पर बल दिया। नेहरू ने पश्चिमी देशों में प्रवास के दौरान फैबियन सोशलिज्म के सम्पर्क में आये। इसकी नींव ब्रिटेन में सिडबी वैब, ग्राहम वैलस, बनार्ड शा, सिडनी ओलिवियर आदि बुद्धिवादी लोगों ने डाली। इन विद्वानों ने दुनियां को यह बताया कि समाजवाद एक सहज रूप से ग्रहण किया जाने वाला सिद्धान्त है। ब्रिटेन में औद्योगिक क्रान्ति के पश्चात् यह नवीन विचारधारा स्वतः ही ब्रिटेन में प्रवेश कर गयी। इस विचारधारा के अनुसार भूमि और सम्पत्ति पर सामाजिक नियंत्रण होना चाहिए किन्तु इस प्रक्रिया में सम्पत्ति की बढ़ोत्तरी में कोई व्यवधान नहीं होना चाहिए। नेहरू जी इस विचारधारा की मूल भावना से सहमत थे। इस विचारधारा में परिवर्तन के पीछे हिंसा की भावना नहीं होनी चाहिए, से नेहरू काफी प्रभावित हुए।

नेहरू ने मार्क्सवादी दृष्टिकोण से भारत का अध्ययन किया। उन्होंने 'डिस्कवरी ऑफ इण्डिया' में लिखा कि मार्क्स तथा लेनिन के अध्ययन ने मेरे मन पर शक्तिशाली प्रभाव डाला और मुझे इतिहास और सामाजिक घटनाओं को एक नई दृष्टि से देखने में सहायता की। नेहरू मार्क्स के भौतिकवादी सिद्धान्त से सहमत नहीं थे। वे मानते थे कि मार्क्स का साम्यवाद वैज्ञानिक दृष्टि से सही होते हुए भी इतना भौतिकवादी है कि भारत जैसे नैतिकता से परिपूर्ण देश में इसकी प्रासंगिकता सन्देहपूर्ण है। नेहरू वर्ग संघर्ष की भावना से भयभीत थे। साथ ही साम्यवादी दृष्टिकोण राज्य को जरूरत से ज्यादा महत्व प्रदान करता है और जहाँ व्यक्ति का स्थान गौण है। नेहरू लोकतांत्रिक पद्धति के प्रबल समर्थक थे। लोकतंत्र की नींव व्यक्ति है वहां समाज का स्थान गौड़ है।

1947 में जब ब्रिटिश सरकार ने भारत को स्वतंत्र किया तब देश का विभाजन का दर्द भी दिखायी देता है। यह विभाजन कोई एकाएक नहीं हुआ बल्कि यह ब्रिटिश सरकार की सोची समझी भारतीय कांग्रेस की बढ़ती शक्ति को कम करने के लिए एक रणनीति के तहत किया गया।

1906 में ही भारत में साम्प्रदायिकता के बीज बो दिये गये थे जब हिन्दू और मुसलमानों को अलग करने के लिए साम्प्रदायिक निर्वाचन प्रणाली लागू की गयी। यह एक ऐसी योजना थी जिसके द्वारा साम्प्रदायिक चुनाव मण्डल अर्थात् मुस्लिमों के लिये पृथक स्थानों का आरक्षण और उनके चुनाव में केवल मुस्लिम मतदाता ही भाग ले सके। अलीगढ़ कालेज के प्रिंसिपल आर्चबोल्ड के सुझाव पर आगा खाँ एक प्रतिनिधि मण्डल को लेकर 1906 मे शिमला में लार्ड मेयो से मिला। प्रार्थियों ने यह कहा कि मुसलमान को केवल जनसंख्या के आधार पर स्थानों का आरक्षण नहीं मिलना चाहिए अपितु यह उनके राजनैतिक महत्व और साम्राज्य की रक्षा में की गयी सेवाओं के आधार पर मिलना चाहिए। लार्ड मिन्टो ने इस प्रार्थना को स्वीकार कर लिया। 1906 में मुस्लिम लीग की स्थापना हुई। लीग के राजनैतिक उद्देश्य अलीगढ़ में दिये गये नवाब वक्कार–उल–मुल्क के एक भाषण से स्पष्ट हो जाता है। नवाब ने कहा, अल्लाह न करें, यदि अंग्रेजी राज्य भारत से समाप्त हो जाये तो हिन्दू हम पर राज्य करेंगे और हमारी जानमाल और धर्म खतरे में होगा। भारत विभाजन के लिये मोहम्मद अली जिन्ना की महत्वपूर्ण भूमिका थी। जिन्ना अपने राजनैतिक जीवन के प्रारंभिक वर्षों में कांग्रेसी रहे परन्तु बाद में मुस्लिम लीग की विचारधारा से प्रभावित हो गये पूर्णरूपेण साम्प्रदायिकतावादी बन गये। 1932 के साम्प्रदायिक निर्णय ने हिन्दू और मुसलमानों के बीच खाई को और भी चौड़ा कर दिया। दो राष्ट्रों की मांग और प्रत्यक्ष कार्यवाही दिवस की घोषणा ने यह लगभग तय कर दिया कि भारत का विभाजन होकर ही रहेगा। 1940 में मुहम्मद अली जिन्हा ने लाहौर अधिवेशन में कहा, ''ये (हिन्दू और मुसलमान) शब्द नियम निष्ठ अर्थ में धर्म नहीं है, अपितु वास्तव में भिन्न और स्पष्ट सामाजिक व्यवस्था है और यह एक स्वप्न है कि कभी भी हिन्दू और मुसलमान मिलकर एक राष्ट्र बना सकते हैं।

1930 के दशक में नेहरू को यह उम्मीद थी कि मुस्लिम समुदाय के लोग उनके समाजवादी दर्शन का समर्थन करेंगे न कि एक ऐसी पार्टी का जो धर्म के आधार पर गठित हुई हो। इस बीच मुसलमान धीरे–2 कांग्रेस छोड़कर लीग में आते गये। 1940 के दशक में जब मुसलमान जिन्ना के पीछे गोलबन्द हो गये तो कांग्रेस से समझौते की कोई वजह ही नहीं बची। जिन्ना का यह फैसला उनकी निजी महत्वाकांक्षा से प्रेरित था। एक वक्त था जब जिन्ना हिन्दू मुस्लिम एकता के दूते के रूप में मशहूर हुए। परन्तु जब उन्होंने इस्लाम और मुसलमानों के रक्षक के रूप में अपने को ढाला तब भी अपने निजी जीवन में उन्होंने धर्म को कोई जगह नहीं दी उन्हें अपनी पसंदीदा व्हिस्की से बहुत प्यार था और कुछ विवरणों के अनुसार वह हैम सैंडविच भी खाते थे।[9] तथ्यों का अवलोकन करने के पश्चात् यह बात उभर कर सामने आती है कि कांग्रेस की अदूरदर्शिता जिन्ना की महत्वाकांक्षा अंग्रेजों की अनैतिकता और हिन्दुस्तान के प्रति उनके रवैया ने हिन्दुस्तान का बंटवारा 1940 के दशक तक लगभग निश्चित कर दिया। मुसलमान बड़ी तेजी से सिर्फ अपने बारे में या सिर्फ मुसलमानों के बारे में सोचने की दिशा में बढ़ रहे थे। 1927 तक मुस्लिम लीग के 1300 सदस्य थे, लेकिन 1944 तक सिर्फ बंगाल में इसके सक्रिय सदस्यों की संख्या 5 लाख से ऊपर पहुंच चुकी थी (पंजाब में इसके सक्रिय सदस्यों की संख्या 2 लाख थी)। सभी तबकों के मुसलमान लीग के पीछे लामबंद होने लगे। उन्हें यह भय सता रहा था कि एक अखण्ड भारत में उन्हें 'ब्राह्मण–बनिये राज' में मातहत होकर रहना पड़ेगा।

स्वतंत्रता से पूर्व 1946 में पूरे देश में साम्प्रदायिकता का माहौल तैयार हो चुका था।

मानवता को शर्मसार करने वाले कत्लेआम हुए। नवम्बर 1946 तक देश में हिंसा से मरने वालों की संख्या 5000 तक पहुंच चुकी थी। हाउस आफ लार्डस को सौंपे गये दस्तावेज में नवम्बर, 1946 और 18 मई, 1947 के बीच हिन्दुस्तान में हुई हिंसा में 4014 लोग मारे गये, जिसमें 3024 लोग सिर्फ पंजाब में मारे गये। इसी बीच भारत को 15 अगस्त, 1947 को स्वतंत्र कर दिया गया। नेहरू की सबसे बड़ी चिन्ता साम्प्रदायिकता को नियंत्रित करना और बड़ी संख्या में बंटवारे के परिणामस्वरूप शरणार्थियों को बसाने की थी। इस बंटवारे से एक करोड़ लोग इधर से उधर हुए। जवाहर लाल नेहरू ने ऐसे ही एक शरणार्थी काफिले का हवाई सर्वेक्षण किया जिसमें करीब एक लाख लोग शामिल थे और यह दस मील लम्बा था। यह काफिला जालंधर से लाहौर की तरफ जा रहा था जिसे अमृतसर से होकर जाना था। यह इतिहास का सबसे बड़ा विस्थापन था। नेहरू ने भयभीत और आशंकित अल्पसंख्यक मुस्लिम समुदाय को यह भरोसा दिलाया कि वह यहां सुरक्षित हैं प्रधानमंत्री नेहरू ने जोर देकर कहा कि हिन्दुस्तान एक ऐसा मुल्क है जहां मुसलमान शांतिपूर्वक जीवनयापन कर सकते हैं। उन्होंने हिन्दुओं को सौहार्दपूर्ण वातावरण बनाने के लिए तैयार किया तथा बताया कि मुसलमान भी अखण्ड भारत का अभिन्न अंग रहे हैं। साम्प्रदायिकता के उस माहौल में जब हर कोई पागल होने पर उतारू था उस समय अकेले नेहरू ने तर्क और उदार दृष्टिकोण अपनाने की बात की। नेहरू ने जोर देकर कहा कि हम जिस तरह से अपने बहुसंख्यक समाज के साथ व्यवहार करते हैं, उसी तरह का व्यवहार अल्पसंख्यक वर्ग के साथ करेंगे। नेहरू मानते थे कि अल्पसंख्यकों की सुरक्षा की जिम्मेदारी भारत सरकार और कांग्रेस की जिम्मेदारी है।

नेहरू लोकतांत्रिक सिद्धान्तों के पक्षधर थे उन्होंने भारत में चुनाव आयोग का गठन किया और मार्च, 1950 में सुकुमार सेन को मुख्य चुनाव आयुक्त बनाया। उस चुनाव में मतदाताओं की कुल संख्या 17 करोड़ 60 लाख थी जिनकी उम्र 21 वर्ष या उसके ऊपर थी। पहले आम चुनाव का कार्य फरवरी, 1952 के आखिरी सप्ताह में खत्म हुआ। मतों की गणना के पश्चात् कांग्रेस पार्टी भारी बहुमत से विजयी हुई। पार्टी को संसद की 489 में से 364 सीटें और पूरे देश की विधानसभा में 3,280 विधानसभा सीटों में 2247 सीटों पर कांग्रेस विजयी हुई।

नेहरू प्रगतिवादी विचारधारा पर विश्वास करते थे। आधुनिक भारत के निर्माण के लिये योजनाबद्ध विकास की आवश्यकता थी। भारत की आजादी से पूर्व ही सन् 1938 में कांग्रेस ने एक नेशनल प्लानिंग कमेटी (राष्ट्रीय योजना समिति, एन0सी0पी0) का गठन किया जिसका कार्य आजादी के बाद देश के आर्थिक विकास की नीतियों का खाका खींचना था। इस कमेटी की अध्यक्षता नेहरू ने की थी। इस कमेटी ने जापान और रूस के विकास मॉडल से सबक लिया कि जिन राष्ट्रों ने देर से औद्योगीकरण की राह पर कदम रखा है वहां सरकार का हस्तक्षेप जरूरी माना गया। कमेटी ने रिपोर्ट में कहा कि योजनागत विकास मुनाफे के बजाय सेवा के सिद्धान्तों को बढ़ावा देता है। अर्थव्यवस्था के कई विशद क्षेत्र ऐसे थे जहां निजी क्षेत्र पर भरोसा नहीं किया जा सकता और योजना तभी पूरी हो सकती है जब सामूहिक जन उद्यम के तौर पर संचालित किया जाये। 1950 में प्रधानमंत्री नेहरू की अध्यक्षता में एक राष्ट्रीय योजना आयोग गठित किया जिसके निम्न उद्देश्य थे–

1. उत्पादन को अधिकाधिक सीमा तक बढ़ाओ ताकि देश की प्रतिव्यक्ति आय बढ़ सके।
2. देश के लोगों को पूर्ण रोजगार प्राप्त हो।
3. लोगों में धन तथा आय की असमानता कम से कम हो सके।
4. देश में एक समाजवादी समाज की स्थापना हो जो न्याय तथा असमानता पर आधारित हो जिसमें शोषण न हो।

आर्थिक योजना के उद्देश्य एक मिश्रित अर्थव्यवस्था द्वारा पूरे किये जाने थे, अर्थात जहां निजी तथा राजकीय क्षेत्र दोनों सहअस्तित्व में

कार्य करें और सम्भवतः कुछ उद्योगों में दोनों की भागीदारी भी हो।

सन् 1951 में योजना आयोग ने पहली पंचवर्षीय योजना का मसौदा तैयार किया जिसमें कृषि विकास पर ध्यान केन्द्रित किया गया जो बंटवारे में सबसे ज्यादा प्रभावित हुआ। खाद्य उत्पादनों को बढ़ावा देने के अलावा आयोग ने परिवहन और संचार के साधनों का विकास और अन्य सामाजिक सेवाओं पर ध्यान केन्द्रित किया। योजना में कल्याणकारी राज्य की बात की गयी।[16] योजना अवधि के अंत तक भारत में पांच भारतीय प्रौद्योगिकी के संस्थान स्थापित किये गये। उच्च शिक्षा की मजबूती के लिये विश्वविद्यालय अनुदान आयोग की स्थापना की गयी। इस अवधि में कई सिंचाई परियोजनायें प्रारम्भ की गयीं, भाखड़ानांगल बांध और हीराकुण्ड परियोजनायें इसी योजना की देन हैं। इस योजना के अन्तर्गत कृषि में 20% वृद्धि दर्ज की गयी। राष्ट्रीय आय में 18% वृद्धि प्रति व्यक्ति आय में 11% वृद्धि और प्रतिव्यक्ति उपभोग में 9% वृद्धि दर्ज की गयी।

नेहरू ने कहा मुझे स्पष्ट लग रहा है कि, हमें भारत का औद्योगीकरण करना है और जितनी जल्दी ये हो सके उतना ही अच्छा है। इस उद्देश्य को द्वितीय पंचवर्षीय योजना में महत्वपूर्ण स्थान दिया गया। इस मसौदे को प्रशान्त चन्द्र महालनोबिस ने तैयार किया। महालनोबिस ही वह व्यक्ति है जिसने कलकत्ता में भारतीय साख्यिकीय संस्थान स्थापित किया। फरवरी 1949 में महालनोबिस के केन्द्रीय मंत्रिमण्डल का सांख्यिकीय सलाहकार नियुक्त किया। अगले वर्ष उन्होंने नेशनल सैम्पल सर्वे की स्थापना में मदद् की। इसी प्रकार केन्द्रीय सांख्यिकीय संगठन की स्थापना में उन्होंने अहम भूमिका निभाई।द्वितीय पंचवर्षीय योजना के अन्तर्गत देश के औद्योगिक आधार को भविष्य में अधिक तीव्र विकास के लिए सुदृढ़ बनाने के लिए भारी उद्योग तथा मूल उद्योगों के विकास का लक्ष्य निर्धारित किया। 1956 में औद्योगिक नीति की घोषणा की गयी जिसके अन्तर्गत उद्योगों के विकास के लिए समाजवादी ढंग के समाज की स्थापना को स्वीकार किया गया। जिससे कल्याणकारी राज्य और समाजवादी अर्थव्यवस्था के राष्ट्रीय लक्ष्य की स्थापना हो सके।इस योजना के अन्तर्गत जल विद्युत योजनायें, पांच स्टील प्लान्टों की स्थापना, कोयले का उत्पादन बढ़ाया गया, रेलवे का विस्तार किया गया। 1957 में टाटा इन्स्टीट्यूट आफ फण्डामेन्टल रिसर्च की स्थापना हुयी।

तृतीय पंचवर्षीय योजना के अन्तर्गत कृषि और गेहूं उत्पादन में सुधार पर जोर दिया गया परन्तु 1962 के भारत–चीन युद्ध के कारण अर्थव्यवस्था में कमजोरियां उजागर हुई। रक्षा और उद्योगों पर ध्यान केन्द्रित किया गया। 1965–66 में पाक युद्ध के कारण अर्थव्यवस्था को पुनः झटका लगा। बांधों का निर्माण जारी रखा गया। कई ग्रामीण क्षेत्रों में प्राथमिक स्कूल शुरू किये गये। जमीनी स्तर पर चुनाव शुरू किये गये। राज्य बिजली बोर्डों का गठन किया गया। राज्यों को माध्यमिक और उच्च शिक्षा की जिम्मेदारी दी गयी। राज्य सड़क परिवहन निगमों का गठन किया गया। साथ ही सड़क निर्माण के लिये राज्यों को जिम्मेदारी दी गयी। इस दौरान कृषि उत्पादन में गिरावट दर्ज की गयी साथ ही औद्योगिक उत्पादन में भी सन्तोषजनक वृद्धि नहीं हो सकी।

नेहरू का नाम इतिहास में सदैव अविस्मरणीय रहेगा। हमें यह याद रखना होगा कि अंग्रेज भारत से जाते समय कृषि और उद्योगों को नितान्त पिछड़ी स्थिति में छोड़कर गये थे। सम्प्रदायवाद क्षेत्रवाद और राजनीति पर आधारित जातिवाद ब्रिटिश सरकार की देन थी। इन सब कठिन परिस्थितियों से निपटने के लिये नेहरू ने भरसक प्रयास किया कहीं पर सफल हुए और कहीं पर वह असफल भी रहे। 1952 के चुनाव के बाद भारतीय लेखक नीरद सी0 चौधरी ने एक मशहूर पत्रिका में नेहरू पर लेख लिखा। जिसमें उन्होंने कहा नेहरू का नेतृत्व भारत की एकता के पीछे सबसे बड़ी नैतिक शक्ति है। वह सिर्फ कांग्रेस पार्टी के नेता ही नहीं है बल्कि हिन्दुस्तान

की जनता के नेता हैं और महात्मा गांधी के सही उत्तराधिकारी है। नेहरू सरकारी तंत्र और जनता को साथ लेकर चल रहे हैं, जिसके बिना इन कठिन क्षणों में हिन्दुस्तान शायद स्थायी सरकार से वंचित हो जाता। रामचन्द्र गुहा लिखते हैं, एक तरफ देश के भीतर नेहरू सार्वभौम जनता और मध्यमवर्गीय शासक वर्ग के बीच सेतु है तो दूसरी तरफ वे हिन्दुस्तान और पूरी दुनिया के बीच भी पुल का काम कर रहे हैं। वे पश्चिम के महान लोकतंत्र के बीच भारत के प्रतिनिधि हैं और भारत में पश्चिमी लोकतंत्र के। उपरोक्त सारगर्भित विश्लेषण के पश्चात् यह कहा जा सकता है कि नेहरू सही मायनों में आधुनिक भारत के प्रथम निर्माता थे।

सन्दर्भ सूची

1. हंसराज रहबर, नेहरू बेनकाब, साक्षी प्रकाशन, दिल्ली, 2010, पृष्ठ–14,15
2. वही, पृष्ठ–43
3. डा0 एम0सी0 जोशी, गांधी नेहरू तथा अम्बेडकर अभिव्यक्ति प्रकाशन,
इलाहाबाद, 1999, पृष्ठ–57
4. वही, पृष्ठ–62
5. वही, पृष्ठ–63
6. तारा चन्द्र, भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन का इतिहास, खण्ड तीन (अनुवाद प्रयाग नारायण त्रिपाठी), प्रकाशन विभाग, 2007, पृष्ठ–393
7. बी0एल0 ग्रोवर, आधुनिक भारत का इतिहास एक नवीन मूल्यांकन, एस0 चाँद कम्पनी लि0, नई दिल्ली, 2002, पृष्ठ–422
8. रामचन्द्र गुहा, भारत गांधी के बाद (अनुवाद सुशांत झा), पेंगुइन बुक्स, 2014, पृष्ठ–31
9. वही, पृष्ठ–32
10. वही, पृष्ठ–33
11. वही, पृष्ठ–14
12. वही, पृष्ठ–19
13. वही, पृष्ठ–161
14. वही, पृष्ठ–165
15. बी0एल0 ग्रोवर, आधुनिक भारत का इतिहास एक नवीन मूल्यांकन, पृष्ठ–478
16. रूद्र दन्त एवं के0पी0 सुन्दरम–भारतीय अर्थव्यवस्था, एस0 चाँद कम्पनी लि0, नई दिल्ली, 1992, पृष्ठ–221
17. वही, पृष्ठ–227
18. रामचन्द्र गुहा, भारत गांधी के बाद, (अनुवाद सुशांत झा), पेंगुइन बुक्स, 2014, पृष्ठ–258
19. रूद्र दत्त एवं के0पी0 सुन्दरम–भारतीय अर्थव्यवस्था, एस0 चाँद कम्पनी लि0, नई दिल्ली, 1992, पृष्ठ–221